बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2020 - 2021/22
विषय - समकालीन भारत एवं शिक्षा
यूनिट - V (a)
प्रकरण - शान्ति शिक्षा में शिक्षक की भूमिका
व्याख्यान सं. - 05

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

भूमिका

आज पूरी दुनिया में किसी न किसी रूप में अशांति व तनाव का वातावरण व्याप्त है। इसक सबसे बुरा प्रभाव युवा वर्ग के लोगों पर पड़ता है। इसका कारण उनका अति संवेदनशील होना है। उनकी उत्तेजना व संवेदनशीलता को सही मार्गदर्शन उचित समय पर देना बहुत आवश्यक हो जाता है। प्रश्न यह है कि उन्हें कौन मार्गदर्शन दे। इस कार्य के लिए किसी शिक्षक के बेहतर विकल्प नही हो सकता है। कारण, शिक्षा वह माध्यम है जो किसी व्यक्ति को उसके बेहतर जीवन के लिए प्रायस को समाज की भलाई में बदल देती है। यह मन व आत्मा को शुद्ध रखती है। यह किसी भी क्षेत्र में प्रदर्शन के लिए शक्ति एवं आवश्यकताएं जुटाने में मदद करती है। शिक्षा शिक्षकों द्वारा प्रदान की गई सेवाओं में से एक है। हमारे राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वे छात्रों को उनके अपने कौशल, अच्छी आदतें, व्यवहार सीखाने एवं एक अच्छा नागरिक बनने में मदद करते हैं। साथ ही दुनिया में शांति एवं सद्भाव के महत्व का अहसास कराते हैं।

शांति हेतु शिक्षकों के कर्तव्य एवं वांछित कौशल

शांति शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका को स्पष्ट करते हुए गाँधीजी ने कहा है - "बुनियादी शिक्षा हमने जानबूझ कर नैतिक व धार्मिक शिक्षा को सम्मिलित नहीं किया है। सभी धर्मों की शिक्षा समाज में जिस प्रकार दी जाती है, उसमें भय था कि वह राष्ट्रीय एकता के विविध समस्याओं का कारण न बन जाए। किन्तु मेरे विचार से सभी धर्मों में जो सामान्य सत्य हों व सभी छात्रों को बताए जाने चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम शिक्षको को इन इन सत्यों को अपने जीवन में उतारना होगा। शिक्षक के आचरण का अनुकरण करके ही बच्चे सत्य एवं न्याय जैसे जीवन-मूल्यों को, जो सभी धर्मों का आधार हो, सीख सकेंगे। ये मूल्य पुस्तकों या शब्दों के माध्यम से नहीं सिखाए जा सकते हैं।"

आज के बालक व छात्रों को परिवार व समाज में सभी स्थानों पर मूल्यहीनता दिखाई देती है। परिवार के बड़े लोगों, जन-प्रतिनिधियों, व्यवसायिओं आदि में उसे आदर्श व्यक्ति नहीं दिखाई

देता है। ऐसे में शांति शिक्षा के लिए किसी शिक्षक में निम्मलिखित कौशलों या योग्यताओं का होना आवश्यक है -

1. **धर्म का ज्ञान** – धर्म से तात्पर्य किसी विशेष प्रचलित धर्म यो सम्प्रदाय से नहीं। धर्म का अर्थ है - धारणीय। वे विचार या मूल्य जिनके धारण करने से मनुष्य का सम्यक विकास हो, अच्छा आचरण हो, और वह आदर्श जीने के लिए उन्मुख हो। शिक्षकों द्वारा इन मूल्यों का प्रस्तूतिकरण बालकों को भी उस मार्ग पर चलने के लिए उन्हें प्रेरित करेगा।

2. **आत्मगौरव** – शिक्षक में आत्मगौरव का होना अति आवश्यक है। बच्चे अपने शिक्षक को सर्वोपरि मानते है। अतः किसी शिक्षक का रहन-सहन, आचरण, व्यवहार आदि अनुकरणीय होना आवश्यक है। भारत एवं समूचे विश्व में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना फैलाने का भार शिक्षक पर ही है।

3. **प्रेरणास्त्रोत** – जिस तरह एक डॉक्टर मानव शरीर में आए विकारों का इलाज कर उस नया जीवन देता है उसी तरह एक शिक्षक का कार्य भी शिक्षा में उत्पन्न विकृतियों का पता लगाकर उसे पुनः प्राणवान बनाना है। किसी ने ठीक ही कहा है, "औसत दर्जे का शिक्षक बताता है, अच्छा शिक्षक समझाता है, उससे भी अच्छा शिक्षक प्रदर्शित करता है और अलौकिक शिक्षक प्रेरित करता है।"

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि पढ़ाते समय यदि अध्यापक रूचिपूर्ण अध्यापन पद्धति का उपयोग करें एवं साथ ही प्रत्यक्ष स्वयं के व्यवहार के द्वारा भी शान्ति को विद्यार्थियों को अवगत कराएंगे तो आसानी से स्कूलों व विद्यार्थियों में शान्ति स्थापित किया जा सकता है। वह अपने व्यवहार, अध्यापन, प्रत्यक्ष कार्य आदि में शान्तिप्रिय पद्धति को अपनाकर सामंजस्य का निर्माण कर सकते है। विद्यार्थियों में मूलतः अनुकरण करने की स्वभाविक प्रवृति होती है। अतः छात्र अपने शिक्षकों का अनुकरण करते हुए शन्तिप्रिय बन जाते हैं।

(समाप्त)